संत कौन हैं?

अकसर लोग संत को ऐसे व्यक्ति के रूप में समझते हैं जो पूरी तरह से नैतिक हो, जो कभी पाप न करे और हमेशा अच्छे कर्म करता रहे। यह सामान्य, सांसारिक दृष्टिकोण है। लेकिन बाइबल हमें संत के बारे में गहरी और सही समझ देती है।

पाप की समस्या

बाइबल सिखाती है कि सभी मनुष्य पापी हैं और परमेश्वर के पूर्ण मानक से चूकते हैं। पाप केवल गलती नहीं है, बल्कि एक ऐसी स्थिति है जो हमें परमेश्वर से अलग कर देती है (रोमियों 3:23)। इसलिए कोई भी अपने प्रयास या अच्छे कर्मों के जरिए सचमुच धर्मी होने का दावा नहीं कर सकता।

रोमियों 3:23 — “क्योंकि सभी ने पाप किया और परमेश्वर की
महिमा से दूर हो गए हैं।”

यह सार्वभौमिक पाप यह दर्शाता है कि कोई भी अपने धर्म या कर्मों के आधार पर परमेश्वर के सामने पवित्र नहीं माना जा सकता (यशायाह 64:6)। यहां तक कि हमारे सबसे अच्छे कर्म भी परमेश्वर की नजर में “गंदे कपड़े” जैसे हैं।

यीशु मसीह — एकमात्र सच्चा संत

बाइबल यीशु मसीह को एकमात्र पाप रहित व्यक्ति बताती है। वह विशेष पवित्र हैं क्योंकि वे पाप रहित जन्मे (कन्या से जन्म) और पूर्ण जीवन जिए (इब्रानियों 4:15)। केवल यीशु ही वह पवित्रता रखते हैं जो परमेश्वर के सामने खड़े होने के लिए जरूरी है।

इब्रानियों 4:15 — “क्योंकि हमारे पास ऐसा उच्च पुरोहित
नहीं है जो हमारी दुर्बलताओं के प्रति सहानुभूति न रख सके, बल्कि ऐसा है जो हर तरह से हमारी तरह परीक्षा में पड़ा, फिर
भी पाप रहित है।”

उनके पाप रहित जीवन और बलिदानी मृत्यु के कारण, उन्हें “पवित्र” कहा जाता है (प्रेरितों के काम 3:14)। केवल वही परमेश्वर के पवित्रता और धर्म के मानक को पूरा करते हैं।

हमारी स्थिति “मसीह में”

सुसमाचार यह बताता है कि यीशु में विश्वास के द्वारा परमेश्वर हमें धर्मी और पवित्र मानते हैं — यह हमारे कर्मों के कारण नहीं, बल्कि यीशु की धर्मिता जो हमें दी गई है, उसके कारण है।

रोमियों 3:24 — “और उनकी कृपा द्वारा, जो मसीह यीशु में उद्धार के माध्यम से है, हमें न्यायसंगत ठहराया जाता है।”

इसका मतलब है कि जब हम यीशु में विश्वास करते हैं, तो परमेश्वर हमें “मसीह में” देखते हैं। हमारे पाप माफ हो जाते हैं और उनकी धर्मिता हमें ढक लेती है, जैसे वस्त्र। इसे विश्वास द्वारा न्यायसंगत ठहराना कहते हैं।

यशायाह 61:10 — “वह ने मुझे उद्धार के वस्त्र पहनाया; उसने मुझे धर्म के वस्त्र से ढक दिया।”

यह परिवर्तन तुरंत नैतिक पूर्णता पाने के बारे में नहीं है, बल्कि परमेश्वर के सामने हमें पवित्र घोषित किए जाने के बारे में है क्योंकि हम यीशु में हैं।

संत कौन हैं?

बाइबल के अनुसार, संत वे लोग हैं जो मसीह से संबंधित हैं — यानी

जिन्हें परमेश्वर ने विश्वास के माध्यम से अलग किया है।

भजन संहिता 16:3 — “धरती में संतों के लिए, वे उत्कृष्ट हैं, जिनमें मेरी सारी खुशी है।”

नए नियम में अक्सर सभी विश्वासियों को संत कहा जाता है (रोमियों 1:7; 1 कुरिन्थियों 1:2), जो उनके मसीह में पहचान को दर्शाता है, न कि उनकी नैतिक पूर्णता को।

उद्धार के बाद पाप का क्या?

“मसीह में होना” इसका मतलब यह नहीं है कि हम जानबूझकर पाप करते रहें। सच्चे विश्वासियों को पवित्र आत्मा द्वारा रूपांतरित किया जाता है, जो उन्हें पवित्रता में बढ़ने और पाप से दूर रहने में मदद करता है।

1 यूहन्ना 3:9 — “जो कोई परमेश्वर से जन्मा है, वह पाप करने
की आदत नहीं डालता, क्योंकि परमेश्वर का बीज उसमें स्थायी
है; वह पाप करते रह नहीं सकता क्योंकि वह परमेश्वर से जन्मा है।”

रोमियों 6:1–2 — “तो हम क्या कहेंगे? क्या हम पाप में बने
रहें ताकि कृपा और बढ़े? बिलकुल नहीं! हम जो पाप के लिए मर
चुके हैं, कैसे उसमें और जीवित रह सकते हैं?”

जब हम यीशु को स्वीकार करते हैं, तो हमें पवित्र आत्मा मिलता है (प्रेरितों के काम 2:38), जो हमें सच्चाई में मार्गदर्शन करता है (यूहन्ना 16:13) और एक ईश्वरभक्त जीवन जीने की शक्ति देता है।

परमेश्वर आपको यीशु मसीह की कृपा और ज्ञान में बढ़ने पर आशीर्वाद दें!

Share on:
WhatsApp